

न्यायालय— प्रतिष्ठा अवस्थी, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी गोहद जिला भिण्ड मध्यप्रदेश  
 प्रकरण क्रमांक 728 / 2010  
 संस्थापित दिनांक 23 / 11 / 2010

मध्यप्रदेश राज्य द्वारा आरक्षी केन्द्र गोहद चौराहा  
 जिला भिण्ड म0प्र0

.....अभियोजन

बनाम

1. कौशलेन्द्र सिंह पुत्र श्री राजेन्द्र सिंह तोमर उम्र 26 वर्ष  
 निवासी ग्राम लोधे की पाली थाना गोहद चौराहा
- फरार 2. सूरज सिंह पुत्र श्री सुमेर सिंह यादव उम्र 65 वर्ष  
 निवासी ग्राम सफूली डावर थाना सेंधरी  
 जिला टीकमगढ़ म0प्र0।

..... अभियुक्तगण

(अपराध अंतर्गत धारा— 294 एवं 324 / 34 भा0द0सं0)

(राज्य द्वारा एडीपीओ— श्री प्रवीण सिकरवार)

(आरोपीगण द्वारा अधिवक्ता—श्री पी. के. वर्मा)

:- निर्णय :-

(आज दिनांक 06.06.2017 को घोषित)

आरोपी पर दिनांक 03.10.10 को समय करीबन 13:30 बजे फरियादी राजू के खेत ग्राम लोधे की पाली में सार्वजनिक स्थल पर फरियादी राजू को मां बहन की अश्लील गालियां देकर उसे व सुनने वालों को क्षोभ कारित करने एवं उसी समय सामान्य आशय के अग्रसरण में फरियादी राजू की धारदार आयुध कुल्हाड़ी से मारपीट कर उसे स्वेच्छया उपहति कारित करने हेतु भा0द0सं0 की धारा 294 एवं 324 / 34 के अंतर्गत आरोप है।

2. यह उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत प्रकरण का प्रति प्रकरण क्रमांक 734 / 10 शा.पु. गोहद चौराहा विरुद्ध राजू सिंह इसी न्यायालय में विचाराधीन है, जिसका आज दिनांक को ही पृथक से निर्णय घोषित कर निराकरण किया गया।

3. संक्षेप में अभियोजन घटना इस प्रकार है कि दिनांक 03.10.10 को फरियादी राजू भेंसे चराने ले जा रहा था वह कौशलेन्द्र की मेड़ से भेंसे लेकर जा रहा था उसका कौशलेन्द्र से पूर्व से पैसों के लेनदेन का विवाद था आरोपी कौशलेन्द्र उसे गालियां देने लगा था। उसने आरोपी को गाली देने से मना किया था तो कौशलेन्द्र ने उसके सिर में कुल्हाड़ी मारी थी जिससे उसके सिर से खून निकल आया था। उसका नौकर आ गया था जिसने उसकी पीठ में काट लिया था। मौके पर उसके चाचा रामकुमार एवं प्रकाश सिकरवार आ गए थे जिन्होंने बीचबचाव किया था। फरियादी द्वारा घटना की रिपोर्ट पुलिस थाना गोहद चौराहे पर की गई थी। फरियादी की रिपोर्ट पर पुलिस थाना गोहद चौराहे पर अदम चैक क्र050 / 10 लेखबद्ध की गई थी एवं फरियादी राजू को चिकित्सकीय परीक्षण के लिए भेजा गया फरियादी राजू की चिकित्सकीय रिपोर्ट में राजू को आई चोट मानव दांतों के काटने से आना लेखबद्ध होने के कारण आरोपी के विरुद्ध अ0क्र0154 / 10 पर अपराध पंजीबद्ध कर प्रकरण विवेचना में लिया गया था। विवेचना के दौरान घटनास्थल का नक्शामौका बनाया गया। साक्षीगण

के कथन लेखबद्ध किए गए। आरोपीगण को गिरफ्तार किया गया एवं विवेचनापूर्ण होने पर अभियोगपत्र न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

4. उक्त अनुसार आरोपी के विरुद्ध आरोप विरचित किए गए। आरोपी को आरोपित अपराध पढ़कर सुनाये व समझाये जाने पर आरोपी ने आरोपित अपराध से इंकार किया है व प्रकरण में विचारण चाहा है। आरोपी का अभिवाक् अंकित किया गया।

5. द0प्र0स0की धारा 313 के अंतर्गत अपने अभियुक्त परीक्षण के दौरान आरोपी ने कथन किया है कि वह निर्दोष है उसे प्रकरण में झूठा फंसाया गया है।

6. इस न्यायालय के समक्ष निम्नलिखित विचारणीय प्रश्न उत्पन्न हुये हैं :-

1. क्या आरोपी ने दिनांक 03.10.10 को करीबन 13:30 बजे फरियादी राजू के खेत ग्राम लोधे की पाली में सार्वजनिक स्थल पर फरियादी राजू को मां बहन की अश्लील गालियां देकर उसे व सुनने वालों को क्षोभ कारित किया?
  2. क्या घटना दिनांक को फरियादी राजू के शरीर पर उपहतियां थीं ? यदि हां तो उनकी प्रकृति।
  3. क्या उक्त उपहतियां फरियादी फरियादी राजू को आरोपी द्वारा सामान्य आशय के अग्रसरण में स्वेच्छया कारित की गई?
7. उक्त विचारणीय प्रश्नों के संबंध में अभियोजन की ओर से फरियादी राजूसिंह अ0सा01, बी एल बंसल अ0सा02, रामकुमार अ0सा03, प्रकाश सिंह सिकरवार अ0सा04 एवं डॉ0 आलोक शर्मा अ0सा05, को परीक्षित कराया गया है जबकि बचाव के दौरान आरोपी कौशलेन्द्र वा0सा01 द्वारा स्वयं को परीक्षित कराया गया है।

### निष्कर्ष एवं निष्कर्ष के कारण

#### विचारणीय प्रश्न कमांक 1

8. उक्त विचारणीय प्रश्न के संबंध में फरियादी राजूसिंह अ0सा01 ने न्यायालय के समक्ष अपने कथन में व्यक्त किया है कि घटना उसके न्यायालयीन कथन से लगभग पांच साल पहले की है। वह हार में पशु चराने गया था तो उसकी भैंस कौशलेन्द्र के खेत की मेड़ पर से निकली थी तो कौशलेन्द्र ने उसे गालियां देना शुरू कर दिया था। साक्षी रामकुमार अ0सा03 ने भी कौशलेन्द्र द्वारा गाली गलौच करना बताया है। साक्षी प्रकाश सिंह सिकरवार अ0सा04 द्वारा उक्त बिंदु पर कोई कथन नहीं दिया गया है।

9. इस प्रकार फरियादी राजू सिंह अ0सा01 एवं साक्षी रामकुमार अ0सा03 ने आरोपी कौशलेन्द्र द्वारा गाली गलौच करना बताया है परंतु उक्त साक्षीगण द्वारा यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि आरोपी ने वास्तव में कौन से अश्लील शब्द उच्चारित किए थे जिन्हें सुनकर फरियादी को क्षोभ कारित हुआ था। ऐसी स्थिति में भा0दं0सं0 की धारा 294 के संघटक पूर्ण नहीं होते हैं एवं आरोपी को उक्त अपराध में दोषारोपित नहीं किया जा सकता है। फलतः यह न्यायालय आरोपी को भा0दं0सं0 की धारा 294 के आरोप से दोषमुक्त करती है।

#### विचारणीय प्रश्न कमांक 2

10. उक्त विचारणीय प्रश्न के संबंध में डॉ. आलोक शर्मा अ0सा05 द्वारा न्यायालय के समक्ष अपने कथन में व्यक्त किया गया है कि उसने दिनांक 03.10.10 को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गोहद में थाना गोहद चौराहे के आरक्षक रजनीश द्वारा लाए जाने पर आहत राजूसिंह का चिकित्सकीय परीक्षण किया था एवं परीक्षण के दौरान उसने राजू के शरीर पर दो चोटें पाई थी जिनमें से चोट क01 सिर के बीच वाले भाग में फटा हुआ घाव एवं चोट क0 2 दांये बखा वाले भाग में दांतों के काटने के निशान मौजूद थे उसके मतानुसार चोट क01 सख्त एवं मौथरी वस्तु से आना संभावित थी तथा चोट क02 मानव दांत के काटने से आना संभावित थी। उक्त दोनों चोटें साधारण प्रकृति की थी एवं उसकी परीक्षण अवधि के पूर्व छः घण्टे के अंदर की थी। उसकी चिकित्सकीय रिपोर्ट प्र0पी07 है जिसके ए से ए भाग पर उसके हस्ताक्षर हैं। प्रतिपरीक्षण के पद क03 में उक्त

साक्षी ने यह स्वीकार किया है कि आहत के सिर की चोट सिर के बल गिरने से आना संभव है।

11. फरियादी राजू अ0सा01 ने भी अपने कथन में झगड़े के दौरान उसके सिर एवं पीठ में चोट आना बताया है। साक्षी रामकुमार अ0सा03 एवं प्रकाश सिंह सिकरवार अ0सा04 ने भी उक्त बिंदु पर फरियादी राजू अ0सा01 के कथन का समर्थन किया है एवं राजू के सिर एवं पीठ में चोटें आने बावत् प्रकटीकरण किया है। उक्त सभी साक्षियों का बचाव पक्ष अधिवक्ता द्वारा प्याप्त प्रतिपरीक्षण किया गया है परंतु प्रतिपरीक्षण के दौरान उक्त सभी साक्षियों का कथन घटना दिनांक को फरियादी राजू के शरीर पर उपहति होने के बिंदु पर अखण्डनीय रहा है। प्र0पी01 की अदम चैक एवं प्र0पी03 की प्रथम सूचना रिपोर्ट में भी फरियादी राजू के शरीर में चोट होने का उल्लेख है। इस प्रकार उक्त बिंदु पर फरियादी राजू अ0सा01 के कथन की पुष्टि प्र0पी01 की अदम चैक एवं प्र0पी03 की प्रथम सूचना रिपोर्ट से भी हो रही है उक्त बिंदु पर फरियादी राजू अ0सा01 का कथन डॉ0 आलोक शर्मा अ0सा05 द्वारा भी किया गया है। डॉ0 आलोक शर्मा चिकित्सकीय विशेषज्ञ होकर स्वतंत्र साक्षी हैं उसकी फरियादी से कोई हितबद्धता एवं आरोपीगण से कोई रंजिश होना अभिलेख से दर्शित नहीं है उक्त साक्षी का कथन अपने प्रतिपरीक्षण के दौरान फरियादी राजू के शरीर पर उपहति होने के बिंदु पर अखंडनीय रहा है एवं अखंडनीय रहे कथन के संबंध में यह उपधारणा की जाती है कि अखंडनीय रहे कथन की सीमा तक उभयपक्षों के मध्य कोई विरोध नहीं है।

12. फलतः उपरोक्त चरणों में की गई विवेचना से यह प्रमाणित है कि घटना दिनांक को फरियादी राजू सिंह के शरीर पर उपहतियां थी जिनकी प्रकृति साधारण थी।

### विचारणीय प्रश्न कमांक 3

13. उक्त विचारणीय प्रश्न के संबंध में फरियादी राजूसिंह अ0सा01 ने न्यायालय के समक्ष अपने कथन में व्यक्त किया है कि घटना उसके न्यायालयीन कथन से लगभग पांच साल पहले की है। वह हार में पशु चराने गया था तो उसकी भैंस कौशलेन्द्र के खेत में चली गई थी तो कौशलेन्द्र ने उसे गालियां देना शुरू कर दिया था और आकर हुद्दा हुद्दी की थी कौशलेन्द्र का नौकर सूरज आ गया था तो उसने उसे पकड़ लिया था और कौशलेन्द्र ने उसकी पीठ में काट लिया था जैसे ही नौकर ने आकर उसे पकड़ा था तो कौशलेन्द्र ने उसके सिर में धार की तरफ से कुल्हाड़ी मार दी थी उसके बाद आरोपीगण भाग गए थे। उसने घटना की रिपोर्ट थाना गोहद चौराहे पर की थी जो प्र0पी01 है जिसके ए से ए भाग पर उसके हस्ताक्षर हैं नक्शामौका प्र0पी02 है जिसके ए से ए भाग पर उसके हस्ताक्षर हैं। प्रतिपरीक्षण के पद क्र03 में उक्त साक्षी ने व्यक्त किया है कि झगड़ा दिन के 12 बजे हुआ था। कौशलेन्द्र की मेड़ पर उसकी भैंसे चरने गई थी जिसे उसने लौटा लिया था। उक्त साक्षी ने यह भी स्वीकार किया है कि प्रकाश सिंह झगड़े के बाद ६ टनास्थल पर आए थे उस समय आरोपी कौशलेन्द्र घटनास्थल पर मौजूद था। पद क्र04 में उक्त साक्षी ने यह स्वीकार किया है कि आरोपी कौशलेन्द्र की रिपोर्ट पर उसके, उसके पिता भवरसिंह, प्रकाश सिंह एवं श्रीराम के विरुद्ध न्यायालय में मामला संचालित है तथा इस सुझाव से इंकार किया है कि उसने कौशलेन्द्र की मारपीट की थी। पद क्र05 में उक्त साक्षी ने यह भी स्वीकार किया है कि उसका कौशलेन्द्र से झगड़ा तथा कौशलेन्द्र का उससे झगड़ा राजेन्द्र सिंह के खेत की मेड़ पर हुआ था।

14. साक्षी रामकुमार अ0सा03 एवं प्रकाश सिंह सिकरवार अ0सा04 ने भी अपने कथन में फरियादी राजू अ0सा01 के कथन का समर्थन किया है एवं आरोपी द्वारा राजू की मारपीट किए जाने बावत् प्रकटीकरण किया है।

15. बी एल बंसल अ0सा02 द्वारा प्र0पी03 की प्रथम सूचना रिपोर्ट को प्रमाणित किया गया है एवं विवेचना को प्रमाणित किया गया है।

16. तर्क के दौरान बचाव पक्ष अधिवक्ता द्वारा यह व्यक्त किया गया है कि प्रस्तुत प्रकरण में अभियोजन द्वारापरीक्षित साक्षीगण के कथन परस्पर विरोधाभाषी रहे हैं। अतः अभियोजन घटना संदेह से परे प्रमाणित होना नहीं माना जा सकता है। बचाव पक्ष अधिवक्ता द्वारा यह भी तर्क किया गया है कि आरोपी द्वारा किसी घटना के संबंध में फरियादी के विरुद्ध भी रिपोर्ट दर्ज करायी गयी है जिसका प्रतिप्रकरण कमांक 734/10 गोहद चौराहा विरुद्ध राजू आदि इसी न्यायालय में विचाराधीन है एवं फरियादी द्वारा उस रिपोर्ट से बचने के लिये आरोपी के विरुद्ध झूठा प्रकरण पंजीबद्ध कराया गया है।

17. बचाव के दौरान आरोपी कौशलेन्द्र वा0सा01 द्वारा स्वयं को परीक्षित कराया गया है कौशलेन्द्र वा0सा01 ने न्यायालय के समक्ष अपने कथन में व्यक्त किया है कि उसके न्यायालयीन कथन से लगभग पौने



छः साल पहले दिन के करीबन दो बजे वह अपने खेत पर था तो राजू उसके खेत पर भैंस लेकर आया था उसने भैंस लाने से मना किया था तो राजू ने उसके बांय हाथ की छोटी उंगली में फरसा मारा था राजू के चाचा श्रीराम ने उसके बांये हाथ की कलाई में लाठी मारी थी, प्रकाश ने उसकी नाक में घूंसा मारा था जब उसका नौकर बचाने आया था तो भंवर सिंह ने उसके नौकर की लात घूँसों से मारपीट की थी। उसने घटना की रिपोर्ट थाने पर की थी। प्रथम सूचना रिपोर्ट की प्रमाणित प्रतिलिपि प्र0डी01, मेडिकल रिपोर्ट प्र0डी02, सूरज सिंह की चिकित्सकीय रिपोर्ट प्र0डी03 एवं नक्शामौका की प्रमाणित प्रतिलिपि प्र0डी04 है। उसने राजू की कोई मारपीट नहीं की थी। राजू ने उसके विरुद्ध झूठी रिपोर्ट की थी। प्रतिपरीक्षण के पद क्र02 में उक्त साक्षी ने व्यक्त किया है कि उसने राजू को स्वयं चोट कारित करते हुए नहीं देखा था।

18. प्रस्तुत प्रकरण में फरियादी राजू सिंह अ.सा. 1 ने न्यायालय के समक्ष अपने कथन में व्यक्त किया है कि घटना वाले दिन वह पशु चराने हार में गया था। उसकी भैंस कौशलेन्द्र के खेत की मेड़ में चली गयी थी तो कौशलेन्द्र से उसका विवाद हो गया था। कौशलेन्द्र का नौकर सूरज भी आ गया था। सूरज ने उसे पकड़ लिया था तथा कौशलेन्द्र ने उसकी पीट में काट लिया था एवं उसके सिर में धार की तरफ से कुल्हाड़ी मार दी थी। इस प्रकार फरियादी राजू अ.सा. 1 ने अपने कथन में आरोपी कौशलेन्द्र द्वारा झगड़े के दौरान उसकी पीठ में काट लेना बताया है। साक्षी रामकुमार अ.सा. 3 ने भी कौशलेन्द्र द्वारा राजू की पीठ में काट लेना बताया है। परंतु यह बात साक्षी प्रकाश सिंह अ.सा. 4 द्वारा नहीं बतायी गयी है। प्रकाश सिंह अ.सा. 4 ने सूरज द्वारा राजू की पीठ में काट लेना बताया है। इस प्रकार उक्त बिन्दु पर फरियादी राजू अ.सा. 1, साक्षी रामकुमार अ.सा. 3, साक्षी प्रकाश सिंह अ.सा. 4 के कथन से विरोधाभासी रहे हैं। इसके अतिरिक्त फरियादी राजू अ.सा. 1 ने आरोपी कौशलेन्द्र द्वारा उसकी पीठ में दाँतो से काट लेना बताया है परंतु इस तथ्य का उल्लेख कि कौशलेन्द्र ने राजू की पीठ में काँटा था, प्रदर्श पी 1 की अदम चैक एवं प्रदर्श पी 3 की प्रथम सूचना रिपोर्ट में नहीं है। प्रदर्श पी 1 के अदम चैक एवं प्रदर्श पी 3 की प्रथम सूचना रिपोर्ट में आरोपी सूरज द्वारा कौशलेन्द्र की पीठ में दाँतो से काट लेने का उल्लेख है। इस प्रकार उक्त बिन्दु पर फरियादी राजू अ.सा. 1 का कथन, प्रदर्श पी 1 के अदम चैक एवं प्रदर्श पी 3 की प्रथम सूचना रिपोर्ट से भी किंचित विरोधाभासी रहा है। परंतु यह मानवीय स्वभाव है कि वह इस कारण से कि उसके कथन पर अधिक विश्वास किया जाये, घटना को बढ़ा चढ़ा कर प्रस्तुत करता है। परंतु मात्र इस आधार पर उसके संपूर्ण कथनो को अविश्वनीय नहीं माना जा सकता है। न्याय दृष्टान्त अगर अहीर और अन्य विरुद्ध बिहार राज्य ए आई आर 19965 एस.सी. 265 में यह विधिक स्थिति प्रतिपादित की गयी है कि एक झूठ तो सब झूठ, ना तो विधि का सुस्थापित नियम है और ना ही प्रक्रिया का, क्योंकि शायद ही कोई ऐसा साक्षी हो, जिसके कथनो में असत्य का अंश ना हो या बढ़ा चढ़ा कर वर्णन या नमक मिर्च लगा कर वर्णन ना किया जा रहा हो या उसमें सजावट ना हो। न्याय दृष्टान्त अब्दुल गनी विरुद्ध मध्य प्रदेश राज्य ए आई आर 1954 एससी 31 में यह विधिक स्थिति प्रतिपादित की गयी है कि यह न्यायालय का कर्तव्य है कि वह झूठ एवं सच के मिश्रण में से सच को निकालने का प्रयास करे। न्यायालय को दूध का दूध एवं पानी का पानी करने तथा भूसे के ढेर से दाना निकालने का प्रयास करना चाहिये। साक्ष्य में फर्क होने पर संपूर्ण साक्ष्य को एवं मामले को नकारने का सरल तरीका अपनाया जाना उचित तरीका नहीं है।

19. प्रस्तुत प्रकरण में यद्यपि फरियादी राजू अ.सा. 1 के कथन प्रदर्श पी 1 की अदम चैक एवं प्रदर्श पी 3 की प्रथम सूचना रिपोर्ट से किंचित विरोधाभासी रहे परंतु मात्र इस आधार पर फरियादी राजू अ.सा. 1 के संपूर्ण कथनो को अविश्वनीय नहीं माना जा सकता है।

20. फरियादी राजू अ.सा. 1 ने अपने प्रतिपरीक्षण के दौरान यह भी व्यक्त किया है कि झगडा दिन के करीब 12.00 बजे हुआ था। जबकि प्रदर्श पी 1 की अदम चैक में झगड़े का समय दिन के 13.30 बजे अंकित है। इस प्रकार उक्त बिन्दु पर भी फरियादी राजू अ.सा. 1 के कथन प्रदर्श पी 1 के अदम चैक से किंचित विरोधाभासी रहे हैं। परंतु यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि घटना दिनांक 03.10.10 की है एवं फरियादी राजू अ.सा. 1 के कथन न्यायालय में दिनांक 27.01.16 को अंकित किये गये हैं। ऐसी स्थिति में समय का लंबा अंतराल होने के कारण फरियादी के कथनो में उक्त विसंगति होना स्वाभाविक है एवं उक्त तथ्य इतना तात्विक भी नहीं है जिसके आधार पर संपूर्ण अभियोजन घटना को अविश्वनीय माना जाये।

21. फरियादी राजू अ.सा. 1 ने अपने कथन में व्यक्त किया है कि घटना वाले दिन उसकी भैंस कौशलेन्द्र के खेत में मेड़ में चली गयी थी तो कौशलेन्द्र ने उसे गाली देना शुरू कर दिया था। उसकी गुददा गुददी की थी एवं कौशलेन्द्र ने उसके सिर में धार की तरफ से कुल्हाड़ी मार दी थी। उक्त साक्षी ने प्रतिपरीक्षण के दौरान यह भी स्वीकार किया है कि उसका कौशलेन्द्र से झगडा एवं कौशलेन्द्र का उससे

झगडा राजेन्द्र सिंह के खेत की मेढ पर हुआ था। उक्त साक्षी का बचाव पक्ष अधिवक्ता द्वारा पर्याप्त प्रतिपरीक्षण किया गया है परंतु प्रतिपरीक्षण के दौरान उक्त साक्षी का कथन तुच्छ विसंगतियों को छोड़ कर तात्विक विरोधाभासों से परे रहा है। यहाँ तक साक्षी रामकुमार अ.सा. 3 एवं प्रकाश सिंह अ.सा. 4 के कथन का प्रश्न है, उक्त साक्षीगण ने भी फरियादी राजू अ.सा. 1 के कथन का समर्थन किया है एवं आरोपी कौशलेन्द्र द्वारा राजू के सिर में कुल्हाड़ी मार देने बाबत प्रकटीकरण किया है। साक्षी रामकुमार अ.सा. 3 ने अपने प्रतिपरीक्षण के दौरान यह भी व्यक्त किया है कि उसने आरोपी कौशलेन्द्र को फरियादी राजू को कुल्हाड़ी मारते हुये देखा था। प्रकाश सिंह अ.सा. 4 ने भी अपने प्रतिपरीक्षण के दौरान यह बताया है कि जब कौशलेन्द्र ने राजू को कुल्हाड़ी मारी थी तो उस समय वह मौके पर आ गया था। उसने कौशलेन्द्र को राजू को कुल्हाड़ी मारते हुये देखा था। उक्त दोनों ही साक्षीगण का बचाव पक्ष अधिवक्ता द्वारा पर्याप्त प्रतिपरीक्षण किया गया है परंतु प्रतिपरीक्षण के दौरान उक्त दोनों ही साक्षीगण का कथन तात्विक विरोधाभासों से परे रहा है। इस प्रकार साक्षी रामकुमार अ.सा. 3 एवं प्रकाश सिंह अ.सा. 4 के कथनों से भी यह दर्शित है कि उक्त साक्षीगण ने भी कौशलेन्द्र को राजू के सिर में कुल्हाड़ी मारते हुये देखा था।

22. बचाव पक्ष अधिवक्ता द्वारा यह भी तर्क किया गया है कि आरोपीगण द्वारा उक्त घटना के संबंध में फरियादी के विरुद्ध भी रिपोर्ट दर्ज करायी गयी है जिसका प्रतिप्रकरण क्रमांक 734/10 गोहद चौराहा विरुद्ध राजू आदि न्यायालय में विचाराधीन है एवं फरियादी द्वारा उक्त रिपोर्ट से बचने के लिये आरोपी के विरुद्ध झूठा प्रकरण पंजीबद्ध कराया है। आरोपी कौशलेन्द्र ब.सा. 1 द्वारा उक्त बिन्दु पर स्वयं को परीक्षित कराया गया है। कौशलेन्द्र ब.सा. 1 ने अपने कथन में व्यक्त किया है कि घटना वाले दिन फरियादी राजू उसके चाचा श्रीरामप्रकाश, भंवर सिंह ने उसकी एवं उसके नौकर की मारपीट की थी। उसने राजू की कोई मारपीट नहीं की थी। बचाव पक्ष द्वारा उक्त संबंध में प्रतिप्रकरण क्रमांक 734/10 की प्रथम सूचना रिपोर्ट की सत्यापित प्रतिलिपि प्रदर्श डी 1, चिकित्सीय रिपोर्ट की सत्यापित प्रतिलिपि प्रदर्श डी 2 एवं प्रदर्श डी 3 तथा नक्शामौका की सत्यापित प्रतिलिपि प्रदर्श डी 4 भी प्रकरण में प्रस्तुत की गयी है। यद्यपि यह सत्य है कि फरियादी राजू के विरुद्ध प्रतिप्रकरण क्रमांक 734/10 इ.फौ. न्यायालय में विचाराधीन है एवं फरियादी राजू अ.सा. 1 द्वारा भी यह स्वीकार किया है कि कौशलेन्द्र की रिपोर्ट पर उसके तथा उसके पिता भंवर सिंह, प्रकाश सिंह एवं श्रीराम के विरुद्ध न्यायालय में मामला विचाराधीन है। आरोपी कौशलेन्द्र ब.सा. 1 ने भी अपने कथन में घटना वाले दिन फरियादी राजू से झगडा होना बताया है। इस प्रकार प्रकरण में आयी साक्ष्य से यह तो स्पष्ट है कि घटना वाले दिन फरियादी एवं आरोपी के मध्य झगडा हुआ था। आरोपी की ओर से ऐसी कोई साक्ष्य प्रकरण में प्रस्तुत नहीं की गयी है जिससे यह दर्शित होता हो कि फरियादी पक्ष झगडे का अग्रेसर था। प्रस्तुत प्रकरण में फरियादी की भैस आरोपी के खेत की मेढ में चले जाने के उपर से विवाद हुआ है। उभयपक्षों की साक्ष्य से यह दर्शित नहीं है कि फरियादी पक्ष झगडे का अग्रेसर था। आरोपी कौशलेन्द्र ब.सा. 1 ने स्वयं घटना वाले दिन फरियादी से झगडा होना स्वीकार किया है। कौशलेन्द्र ब.सा. 1 द्वारा फरियादी राजू अ.सा. 1 की चोटों के संबंध में भी कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। ऐसी स्थिति में यह नहीं माना जा सकता कि फरियादी द्वारा आरोपीगण के विरुद्ध मिथ्या अपराध पंजीबद्ध कराया गया है एवं उक्त तथ्य से आरोपीगण को कोई लाभ प्राप्त नहीं होता है।

23. बचाव पक्ष अधिवक्ता द्वारा यह भी तर्क किया गया है कि फरियादी राजू अ.सा. 1 ने कौशलेन्द्र द्वारा उसके सिर में कुल्हाड़ी मारना बताया है परंतु चिकित्सीय रिपोर्ट प्रदर्श पी 7 में फरियादी के सिर में कटा हुआ घाव नहीं है। यह तथ्य भी अभियोजन घटना को संदेहास्पद बना देता है। परंतु बचाव पक्ष अधिवक्ता का यह तर्क भी स्वीकार योग्य नहीं है। फरियादी राजू अ.सा. 1 रामकुमार, अ.सा. 3 एवं प्रकाश सिंह अ.सा. 4 ने कौशलेन्द्र द्वारा फरियादी राजू के सिर में धार की तरफ से कुल्हाड़ी मारना बताया है। यद्यपि चिकित्सीय रिपोर्ट प्रदर्श पी 7 में फरियादी राजू के सिर में फटा हुआ घाव होने का उल्लेख है परंतु यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि ग्रामीण व्यक्ति कुल्हाड़ी का उपयोग सामान्यतः लकड़ी काटने के लिये करते हैं। अतः कुल्हाड़ी की धार उतनी तीक्ष्ण नहीं रह जाती है, जितनी की चाकू एवं तलवार जैसे धारदार आयुध की होती है। ऐसी स्थिति में कुल्हाड़ी की चोट से कटा हुआ घाव ना आना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय दण्ड संहिता की धारा 324 को प्रमाणित होने के लिये यह आवश्यक है कि मारपीट किसी असन, वेधन या काटने के किस उपकरण द्वारा या आक्रमक आयुध द्वारा की गयी हो। प्रस्तुत प्रकरण में फरियादी राजू अ.सा. 1 ने आरोपी कौशलेन्द्र द्वारा उसकी कुल्हाड़ी से मारपीट करना बताया है तथा कुल्हाड़ी आक्रमक आयुध की श्रेणी में आती है। ऐसी स्थिति में आरोपी कौशलेन्द्र का कृत्य भारतीय दण्ड संहिता की धारा 324 की परिधि में आता है एवं बचाव पक्ष अधिवक्ता के उक्त तर्क से आरोपी को कोई लाभ प्राप्त नहीं

होता है।

24. प्रस्तुत प्रकरण में फरियादी राजू अ.सा. 1 ने आरोपी कोशलेन्द्र द्वारा उसकी कुल्हाड़ी से मारपीट करना बताया है। साक्षी रामकुमार अ.सा. 3 एवं प्रकाश सिंह अ.सा. 4 द्वारा भी फरियादी राजू अ.सा. 1 के कथन का समर्थन किया है एवं आरोपी कोशलेन्द्र द्वारा राजू की कुल्हाड़ी से मारपीट किया जाना बताया है। उक्त सभी साक्षीगण का बचाव पक्ष अधिवक्ता द्वारा पर्याप्त प्रतिपरीक्षण किया गया है परंतु प्रतिपरीक्षण के दौरान उक्त सभी साक्षीगण का कथन तुच्छ विसंगतियों को छोड़कर तात्विक विरोधाभासों से परे रहा है। फरियादी राजू द्वारा घटना की सूचना यथाशीघ्र थाने पर दी गयी है। फरियादी राजू अ.सा. 1 का कथन तात्विक बिन्दुओं पर प्रदर्श पी 1 की अदम्य चैक एवं प्रदर्श पी 3 की प्रथम सूचना रिपोर्ट से भी पुष्ट रहा है। आरोपी की ओर से उक्त तथ्यों के खण्डन में कोई विश्वसनीय साक्ष्य प्रस्तुत नहीं की गयी है। चिकित्सीय रिपोर्ट प्रदर्श पी 7 में भी फरियादी राजू के शरीर के उसी भाग पर चोट होना वर्णित है जिस भाग पर मारपीट के दौरान चोट आना फरियादी राजू द्वारा बताया गया है। इस प्रकार फरियादी राजू अ.सा. 1 का कथन चिकित्सीय साक्ष्य से भी पुष्ट रहा है एवं यहाँ फरियादी का कथन चिकित्सीय साक्ष्य से पुष्ट हो वहाँ उसके कथनों पर अविश्वास नहीं किया जा सकता है। उक्त संबंध में न्याय दृष्टांत धर्मा विरुद्ध मध्य प्रदेश राज्य 1992 भाग 1 एम पी डब्ल्यू एन 71 उल्लेखनीय है जिसमें माननीय मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा यह प्रतिपादित किया गया है कि जहाँ आहत व्यक्ति का कथन चिकित्सीय साक्ष्य से पुष्ट हो वहाँ उसके कथनों पर अविश्वास नहीं किया जा सकता है।

25. फलतः उपरोक्त चरणों में की गयी विवेचना से युक्तियुक्त संदेह से परे यह प्रमाणित पाया जाता है कि घटना दिनांक को आरोपी कोशलेन्द्र ने फरियादी राजू की आक्रमक धारदार आयुध कुल्हाड़ी से मारपीट कर उसे उपहति कारित की थी।

26. अब न्यायालय को यह विचार करना है कि क्या आरोपी द्वारा फरियादी को स्वेच्छया उपहति कारित की गयी थी? उक्त संबंध में यह उल्लेखनीय है कि फरियादी एवं आरोपी के मध्य भैंसों के उपर विवाद हुआ था एवं उक्त विवाद के दौरान आरोपी द्वारा फरियादी की आक्रमक धारदार आयुध कुल्हाड़ी से मारपीट की गयी थी। मारपीट करते समय आरोपी कोशलेन्द्र यह समझने में सक्षम था कि उसके द्वारा जिस आयुध से फरियादी राजू की मारपीट की जा रही है उससे राजू को उपहति कारित होना संभावित है। आरोपी का ऐसा कहना भी नहीं है कि उसके द्वारा प्राइवेट प्रतिरक्षा के अधिकार का प्रयोग करते हुये फरियादी को उपहति कारित की गयी थी। प्रकरण में आयी साक्ष्य से यह भी दर्शित नहीं है कि फरियादी पक्ष झगड़े को अग्रेसर था। ऐसी स्थिति में प्रकरण में आयी साक्ष्य से यह भी दर्शित होता है कि आरोपी द्वारा फरियादी राजू को स्वेच्छया उपहति कारित की गयी थी।

27. फलतः उपरोक्त चरणों में की गयी समग्र विवेचना से अभियोजन संदेह से परे यह प्रमाणित करने में सफल रहा है कि आरोपी कोशलेन्द्र ने दिनांक 03.10.10 को 13.30 बजे फरियादी के खेत ग्राम लोधे की पाली में सामान्य आशय के अग्रसरण में फरियादी राजू की आक्रमक धारदार आयुध कुल्हाड़ी से मारपीट कर उसे स्वेच्छया उपहति कारित की। फलतः यह न्यायालय आरोपी कोशलेन्द्र को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 324/34 के अंतर्गत दोषी पाती है।

28. समग्र अवलोकन से यह न्यायालय आरोपी कोशलेन्द्र सिंह को भा.द.सं. की धारा 294 के आरोप से दोषमुक्त करते हुये भारतीय दण्ड संहिता की धारा 324/34 के अंतर्गत सिद्धदोष पाते हुये दोषसिद्ध करती है।

29. सजा के प्रश्न पर सुने जाने हेतु निर्णय लिखाया जाना अस्थाई रूप से स्थगित किया गया।

(प्रतिष्ठा अवस्थी)

न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी, गोहद  
जिला भिण्ड म0प्र0



पुनश्च—

30. आरोपी एवं उसके विद्वान अधिवक्ता को सजा के प्रश्न पर सुना गया आरोपी के विद्वान अधिवक्ता द्वारा व्यक्त किया गया कि आरोपी का यह प्रथम अपराध है। आरोपी ने नियमित रूप से विचारण का सामना किया है। अतः आरोपी को परिवीक्षा का लाभ दिया जावे।

31. आरोपी के अधिवक्ता के तर्क पर विचार किया गया प्रकरण का अवलोकन किया गया प्रकरण के अवलोकन से दर्शित होता है कि अभियोजन द्वारा आरोपी के विरुद्ध कोई पूर्व दोषसिद्धि अभिलेख पर प्रस्तुत नहीं की गई है आरोपी द्वारा नियमित रूपसे विचारण का सामना किया गया है परन्तु आरोपी द्वारा जिस तरह से फरियादी राजू की मारपीट कर उसे स्वेच्छया उपहति कारित की गई है उन परिस्थितियों में आरोपी को परिवीक्षा पर छोड़ा जाना उचित नहीं है। आरोपी को शिक्षाप्रद दंड से दंडित किया जाना न्यायोचित है। फलतः यह न्यायालय आरोपी कौशलेन्द्र सिंह को भादस की धारा 324/34 के अंतर्गत छः माह के सश्रम कारवास एवं पाँच सौ रुपये के अर्थदंड तथा अर्थदंड की राशि में व्यतिक्रम होने पर 15 दिवस के अतिरिक्त साधारण कारावास के दंड से दंडित करती है।

32. आरोपी पूर्व से जमानत पर है उसके जमानत एवं मुचलके भारहीन किये जाते हैं।

33. यह उल्लेखनीय है कि प्रकरण में आरोपी सूरज सिंह फरार है। अतः प्रकरण की सम्पत्ति एवं प्रकरण का अभिलेख सुरक्षित रखा जावे।

34. आरोपी जितनी अवधि के लिये न्यायिक निरोध में रहा है उसके संबंध में धारा 428 के अंतर्गत ज्ञापन तैयार किया जावे। आरोपी द्वारा न्यायिक निरोध में बिताई गई अवधि उनकी सारवान सजा में समायोजित की जावे। आरोपी इस प्रकरण में न्यायिक निरोध में नहीं रहा है।

स्थान — गोहद

दिनांक — 06.06.2017

निर्णय आज दिनांकित एवं हस्ताक्षरित

कर खुले न्यायालय में घोषित किया गया।

मेरे निर्देशन में टंकित किया गया।

सही /—

(प्रतिष्ठा अवस्थी)

न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी

गोहद जिला भिण्ड (म0प्र0)

सही /—

(प्रतिष्ठा अवस्थी)

न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी

गोहद जिला भिण्ड (म0प्र0)